अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय – 'प्रभाकर श्रोत्रिय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' (1-12)

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 बचपन

1.1.3 परिवार

1.1.4 शिक्षा

1.1.5 नौकरी

1.2 व्यक्तित्व के गुण

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

1.2.2.1 परिश्रमी व्यक्ति

1.2.2.2 दृढ़संकल्पी एवं संघर्षशील

1.2.2.3 लोकतंत्र से निराश

1.2.2.4 अंतर्मुखी

1.2.2.5 नारी के प्रति करूणा

1.2.2.6 व्यावहारिक मार्क्सवादी

1.2.2.7 मिलनसार व्यक्ति

✷ निष्कर्ष

1.3 कृतित्व

1.3.1 आलोचना

1.3.2 निबंध

1.3.3 नाटक

1.3.4 साक्षात्कार

1.3.5 संपादन
1.3.6 अनुवाद
1.3.7 आलेख / भाषण
1.3.8 विदेश यात्रा
1.3.9 पुरस्कार एवं सम्मान
1.3.10 वर्तमान में
1.3.11 सलाहकार
1.3.12 कार्य (पुर्व में)
1.3.13 अकादमिक कार्य
✷ निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय – 'प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों का कथ्य' (13-33)

2.1 प्रस्तावना
2.1.1 'इला' कथावस्तु
2.1.2 'इला' : कथ्य
2.1.2.1 राजा महाराजाओं के कारोबार की वास्तविकता
2.1.2.2 सदियों से प्रताड़ित एवं शोषित नारी
2.1.2.3 लिंग परिवर्तन की समस्या
2.1.2.4 सत्ता के गुलाम राजगुरू
2.1.2.5 प्रकृति से खिलवाड
2.1.2.6 पक्षपाती राजा मनु
2.1.2.7 प्रकृति महाशक्ति है
✷ निष्कर्ष
2.2 'साँच कहूँ तो' : कथावस्तु
2.2.1 'साँच कहूँ तो' : कथ्य
2.2.2 कथ्य
2.2.2.1 मध्ययुगीन राज–व्यवस्था का चित्रण

2.2.2.2	अनमेल विवाह की समस्या
2.2.2.3	राजमती का चित्रण
2.2.2.4	स्वाभिमानी राजा बीसलदेव
2.2.2.5	राजमती की विरह वर्णन
2.2.2.6	राजमती : मध्ययुगीन पीड़ित नारी
2.2.2.7	दृढ़संकल्पी बीसलदेव
2.2.2.8	युवकों की विदेश गमन की प्रवृत्ति
2.3	*'फिर से जहाँपनाह' : कथावस्तु*
*	*निष्कर्ष*
2.3.1	कथ्य
2.3.1.1	एक्कीसवीं सदी के लोकतंत्र का सही चित्रण
2.3.1.2	भ्रष्ट राजनेता
2.3.1.3	मंत्रीयों की कामुक प्रवृत्ति पर प्रकाश
2.3.1.4	अंधा कानून और अंधी न्याय व्यवस्था का चित्रण
2.3.1.5	एक सिक्के के दो पहलू
2.3.1.6	शक्की राजनेता
2.3.1.7	गुनहगार राजनेता
2.3.1.8	व्यवस्था के विरोध में विद्रोह
*	*निष्कर्ष*

तृतीय अध्याय – 'प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में मंचीयता' (34-52)

3.1	*प्रस्तावना*
3.1.1	प्रभाकर श्रोत्रिय जी के नाटकों में मंच-सज्जा
3.1.2	प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में दृष्य-सज्जा
3.1.3	प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में वेशभूषा एवं रूप-सज्जा
3.1.4	प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में अभिनेयता
3.1.5	प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में प्रकाश-योजना

3.1.6 प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में ध्वनि एवं संगीत-योजना

✷ निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – 'प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों का शिल्प' (53-101)

4.1 शिल्प सैद्धांतिक विवेचन

4.2 कथावस्तु

4.2.1 'इला' : कथावस्तु

4.2.2 'साँच कहूँ तो' : कथावस्तु

4.2.3 'फिर से जहाँपनाह' : कथावस्तु

4.3 चरित्र चित्रण

4.3.1 'इला' : चरित्र चित्रण

4.3.1.1 मनु

4.3.1.2 श्रद्धा

4.3.1.3 इला

4.3.1.4 राजगुरू वशिष्ठ

4.3.1.5 सुद्युम्न

4.3.1.6 सुमति

4.3.1.7 विद्याधर

4.3.1.8 अरूंधती

4.3.1.9 चंद्रिका

4.3.2 'साँच कहूँ तो' : चरित्र चित्रण

4.3.2.1 बीसलदेव

4.3.2.2 राजमती

4.3.2.3 इंद्रावती

4.3.2.4 राजा भोज

4.3.2.5 भानुमती

4.3.2.6 उड़ीसा नरेश

4.3.2.7	लोकगायक
4.3.2.8	विदुषक
4.3.2.9	पंड़ित
4.3.2.10	योगी
4.3.2.11	उड़ीसा की महारानी
4.3.2.12	कुटनी
4.3.3	'फिर से जहाँपनाह' : चरित्र चित्रण
4.3.3.1	अनंत चक्रवर्ती
4.3.3.2	त्यागमूर्ति
4.3.3.3	गुणगान
4.3.3.4	मिस्टर वर्मा
4.3.3.5	मंगलम
4.3.3.6	अब्दुल्ला
4.3.3.7	बलवान
4.3.3.8	वसुंधरा
4.3.3.9	जुही
4.3.3.10	कालिका प्रसाद
4.3.3.11	आदमशाह
4.3.3.12	शफीखान – (सलाहकार)
4.3.3.13	मंगलसिंह – (वजीरे आजम)
4.3.3.14	असदुल्ला – (सिपहसालार)
4.3.3.15	नूरशाह
4.3.3.16	मलिका–ए–आलिया (हाजरा)
4.4	*संवाद तथा कथोपकथन*
4.4.1	'इला' : संवाद तथा कथोपकथन
4.4.2	'साँच कहूँ तो' : संवाद तथा कथोपकथन
4.4.3	'फिर से जहाँपनाह' : संवाद तथा कथोपकथन

4.5 देशकाल वातावरण

4.5.1 'इला' : देशकाल वातावरण

4.5.2 'साँच कहूँ तो' : देशकाल वातावरण

4.5.3 'फिर से जहाँपनाह' : देशकाल वातावरण

4.6 भाषा

4.6.1 'इला' : भाषा

4.6.2 'साँच कहूँ तो' : भाषा

4.6.3 'फिर से जहाँपनाह' : भाषा

4.7 उद्देश्य

4.7.1 'इला' : उद्देश्य

4.7.2 'साँच कहूँ तो' : उद्देश्य

4.7.3 'फिर से जहाँपनाह' : उद्देश्य

✷ निष्कर्ष

✷ उपसंहार (102-105)

✷ संदर्भ ग्रंथ सूची (106)

आधार ग्रंथ

समीक्षा ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ